श्रमिक संगठन की अवधारणा की समाजशास्त्रीय व्याख्या:-

भारतवर्ष में औद्योगिक सम्बन्ध श्रम संघवाद से निकटवर्गीय रूप से सम्बन्धित है। निजी और सरकारी क्षेत्रों में इसकी सत्यता देखने को मिलती है, क्योंकि श्रमिक संघवाद भारतीय अर्थव्यवस्था में पूर्णरूप से गहराई तक पहुँची हुई है। श्रमिक संघ का संगठन समाज के आर्थिक संरचना पर आश्रित हैं, जो कि उसके अन्तर्गत प्रचलित उत्पादन की प्रकृति, राजनीति की शक्ति और मनुष्य की स्वयं विचारों का परिणाम है।

श्रमिक संघवाद एकीकृत और तथ्यात्मक श्रमिकवर्ग का आन्दोलन है जो कि संगठित कार्य-क्रियाओं के द्वारा श्रमिकों के आर्थिक और सामाजिक स्तरों में सुधार लाता है। **बेल, जे0डी0एम0** ने अपनी पुस्तक में संघवाद के सम्बन्ध में वर्णित किया है कि "श्रमिक संघवाद अपनी समिति के गुणों के द्वारा शक्ति को प्राप्त करने में सफल होता है। यह सम्भव है कि वे कुछ सामूहिक शक्ति उपलब्ध कर ले, जिसका सम्बन्ध राजनैतिक सत्ता से नहीं।"

अत: इसे श्रमिकों की यह समिति माना गया है कि उनके रूचियों के उद्देश्यों व्यवस्थित किया जाता है, यह केवल एक समिति ही नहीं बल्कि एक संगठन जैसा कि **ठाकुर सी0पी0** ने लिखा है कि- "श्रमिक संघ का संगठन अध्ययन के लिए प्रेरणादायक क्षेत्र को प्रस्तुत करता है।

अत: श्रमिक संघ औद्योगिक सम्बन्ध और औद्योगिक प्रजातंत्र का एक महत्वपूर्ण अंश माना गया है।

औद्योगिक दृष्टि से अत्यधिक समाजों में तो बहुसंख्यक कर्मचारी आज किसी न किसी बड़े संगठन के नौकर है। ऐसे कर्मचारियों के लिए अपनी सुरक्षा व प्रतिष्ठा कायम करने के लिए यह आवश्यक हो गया है कि वे अपने को संगठित करे और इस प्रकार श्रमिक आन्दोलन आगे बढ़ा। ऐसे औद्योगिक समाजो में बहुसंख्यक श्रमिक अपने समान स्वार्थो से प्रेरित होकर अपने काम और पद के आधार पर श्रमिक संघों में संगठित हो गए है।

श्रमिकों का श्रमिक संघों में संगठित हो जाना ही उन्हें एक अभूतपूर्व और प्रमुख शक्ति प्रदान करता है। इस प्रकार वे प्रबन्ध के मुकाबले में एक विरोधी संगठन के रूप में सामने आते है। वे स्वयं उद्योग पर तरह-तरह से दबाव डालकर स्वंय प्रबन्ध का एक अंग बन जाते है। प्रबन्ध की मनमानी और स्वच्छन्ता पर अंकुश लगा देते है।

श्रमिक संघ स्वयं समूही समाज (Mass-Society) का एक मुख्य आधार है। श्रमिक संघ के अन्दर बिना व्यक्तिगत भेदभाव का ध्यान रखे हुए श्रमिकों को एक समूह में संगठित करने का प्रयास किया जाता है। इस प्रकार श्रमिक संघ श्रमिकों का एक नया सामाजिक समूह बन जाता है। पर जब वह अपनी मॉगों के लिए प्रबन्ध से मुकाबला करता है, तब उसकी राजनीतिक और आर्थिक सौदेबाजी की शक्ति (Bargaining Power) सामने आती है।

प्रबन्धकों के लिए श्रमिक संघ एक संचार, साधन का भी काम कर सकता है। जिसके माध्यम से वे श्रमिकों की कठिनाइयॉ या जरूरते समझ सकें। इस प्रकार कुछ स्थितियों में श्रमिक संघ ही स्वयं दो तरफा संचार का अच्छा साधन सिद्ध होते है। कुछ विद्वानों का मत है कि श्रमिक संघों को एक संचार साधन के रूप में प्रबन्ध से एकीकृत कर देना चाहिए। इसके विपरीत यह कहा जा सकता है कि यह समाकल या एकीकरण तब तक सम्भव नहीं है जब तक श्रमिक संघ प्रबन्ध के मातहत न हो जाऐं। अतः श्रमिक संघ को सिर्फ सूचना देने वाली कड़ी नहीं बनाया जा सकता।

श्रमिक संघों के संगठन की एक और विशेषता है उनके अन्दर व्याप्त अधिक लोकतंत्र की भावना। एक कारखाने के संगठन की तुलना में श्रमिक संघ का संगठन कही अधिक लोकतांत्रिक

होता है। यहाँ पर स्वेच्छा से श्रमिक अपने नेताओं को चुनते है। श्रमिक संघ के नेता प्रबन्धकों की भाँति श्रमिकों को आदेश नहीं दे सकते। वे सदा अपने अनुचरों के प्रति उत्तरदायी होते है। श्रमिक संघ के संचालन में श्रमिकों को यही अधिक स्वतंत्रता प्राप्त हे। इसलिए कहा गया है कि "श्रमिक संघ श्रमिकों के लिए व्यावहारिक लोकतंत्र की आर्दश पाठशालाएँ है।"

श्रम संघ मजदूरियों वेतनभोगी श्रमिकों का एक ऐच्छिक संगठन है जो विशेष रूप से औद्योगिक शान्ति स्थापित करने तथा श्रमिकों के अधिकारों एवं हितों की रक्षा करने के लिए बनाया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य श्रमिकों को अच्छी कार्य की दशाएँ उपलब्ध करवाना तथा उनके जीवन स्तर में सुधार करना है। इस सम्बन्ध में भूतपूर्व राष्ट्रपति **श्री वी0वी0 गिरि** ने अपने पुस्तक में लिखा है कि "श्रम-संघ श्रमिकों का एच्छिक संगठन है। जो सामूहिक कार्यो के द्वारा अपने हितों की वृद्धि एवं सुरक्षा के लिए बनाया जाता है।" आधुनिक जीवन का श्रमिक संगठन एक महत्वपूर्ण अब माना गया है और इसकी भूमिका समाजों में अधिक हे जिसका कि उद्देश्य औद्योगिक विकास करना है। इस सम्बन्ध में **सिडनी** व **वेब** ने लिखा है कि "एक श्रमिक संघ मजदूरी करने वालों का एक स्थाई संगठन है जिसका उद्देश्य अपने कार्यो की दशाओं में सुधार करना अथवा उनको बिगड़ने से रोकना होता है।"